TLPS | Teaching Learning Practices Survey

Anchored by LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION
Strong Foundation, Stronger Future

Supported by TATA TRUSTS

टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे - छत्तीसगढ़

भारत में एफएलएन शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को सशक्त करने के लिए एक अध्ययन

2025 | सारांश

TLPS 2025

टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे 2025, छत्तीसगढ़

दिसम्बर 2025

सहयोग: टाटा ट्रस्ट

क्रियान्वयन में भागीदार: लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एलएलएफ)

मूल्यांकन भागीदार: एजुकेशनल इनिशियटिव (ईआई)

सरकारी भागीदार: छत्तीसगढ़ सरकार

इस रिपोर्ट में उपयोग में लाए गए समस्त चित्र लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन द्वारा लिए गए हैं।

डिजाइन एवं सम्पादन: न्यू कन्सेप्ट इनफॉर्मेशन सिस्टम्स, नई दिल्ली।

आवरण की डिजाइन: आकाश भगत

LLF वेबसाइट **https://languageandlearningfoundation.org/** पर यह रिपोर्ट उपलब्ध है।

इस रिपोर्ट के किसी भी अंश का उपयोग उचित अनुमोदन के साथ अव्यावसायिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।

सुझावित संदर्भ:

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन. (2025). *टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे 2025. छत्तीसगढ़*
https://languageandlearningfoundation.org/teaching-learning-practices-survey/

निम्न संस्था द्वारा प्रकाशित:
लैंग्वेज एण्ड लर्निंग फाउण्डेशन
पहला तल, ब्लाक बी, 8, गुरु रविदास मार्ग
बालाजी एस्टेट, कालकाजी
नई दिल्ली-110019

कार्यकारी सारांश

परिचय

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (नेशनल एजुकेशन पॉलिसी - एनईपी) 2020 ने देश की शिक्षा पद्धति में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (फाउंडेशनल लिटरेसी एण्ड न्यूमेरेसी या एफएलएन) को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इस फोकस को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- बुनियादी स्तर (एनसीएफ-एफएस) 2022 ने और भी मजबूत किया है। इस विजन को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार ने स्पष्ट अधिदेश के साथ निपुण भारत मिशन शुरू किया है। ये अधिदेश है- 2026-27 तक सभी बच्चों को सार्वभौमिक एफएलएन का लक्ष्य प्राप्त करना है। इससे सभी राज्यों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) को और बेहतर बनाने के प्रयासों को बढ़ावा मिला है।

छत्तीसगढ़ सरकार की एफएलएन पहल एक सुविचारित, बहु-आयामी और प्रणालीगत प्रयास के रूप में सामने आती है। राज्य में एफएलएन मिशन को संचालित करने में एससीईआरटी का अकादमिक नेतृत्व हैं तथा समग्र शिक्षा तथा विद्या समीक्षा केंद्र इस कार्य को क्रियान्वित करने में सहभागी हैं। यह मिशन, ईसीसीई से लेकर कक्षा 5 तक शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता को सुदृढ़ करने की दिशा में राज्य की स्पष्ट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह पहल न केवल एनईपी–2020 की भावना के अनुरूप है, बल्कि राज्य में बच्चों के दीर्घकालिक शैक्षिक परिणामों को बेहतर बनाने के लिए एक मजबूत आधार भी प्रदान करती है।

टीएलपीएस 2025 के बारे में

कक्षा 1 और 2 में भाषा और गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं पर व्यवस्थित साक्ष्य देने के लिए टीएलपीएस 2025 की परिकल्पना की गई थी। प्रारंभिक कक्षाओं के विविध संदर्भों में इन शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की जाँच करते हुए सर्वे यह दर्शाता है कि बच्चों की सीखने की सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम और अकादमिक मदद से शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं में क्या परिवर्तन हो रहा है। यह सर्वे अवलोकित कक्षाओं में वर्तमान शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की स्थिति को दिखाता है और साथ ही यह भी बताता है कि शिक्षा प्रणाली के स्तर पर किए जा रहे प्रयासों से कक्षाओं में किस हद तक शैक्षणिक बदलाव हो रहे हैं और किन क्षेत्रों में अतिरिक्त सुधार की आवश्यकता है।

छत्तीसगढ़ में सर्वे का पहला चरण दिसम्बर 2024 और दूसरा चरण मार्च 2025 में पूरा किया गया था। इस सर्वे में दो जिलों (कबीरधाम और नारायणपुर) के 100 स्कूल शामिल थे।

निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

इस सर्वे में निम्न विषयों पर निष्कर्ष प्रस्तुत किये गए हैं- कक्षा में सीखने का वातावरण, पाठ योजना और उसका प्रस्तुतीकरण, भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ, गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ और शिक्षकों एवं बच्चों की कक्षा गतिविधियों के लिए समय विभाजन। यह एफएलएन के कुछ पहलुओं और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास पर उनकी धारणाएँ भी प्रस्तुत करता है।

कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं और शिक्षा प्रणाली स्तरीय परिवर्तन के लिए प्राथमिकताएँ

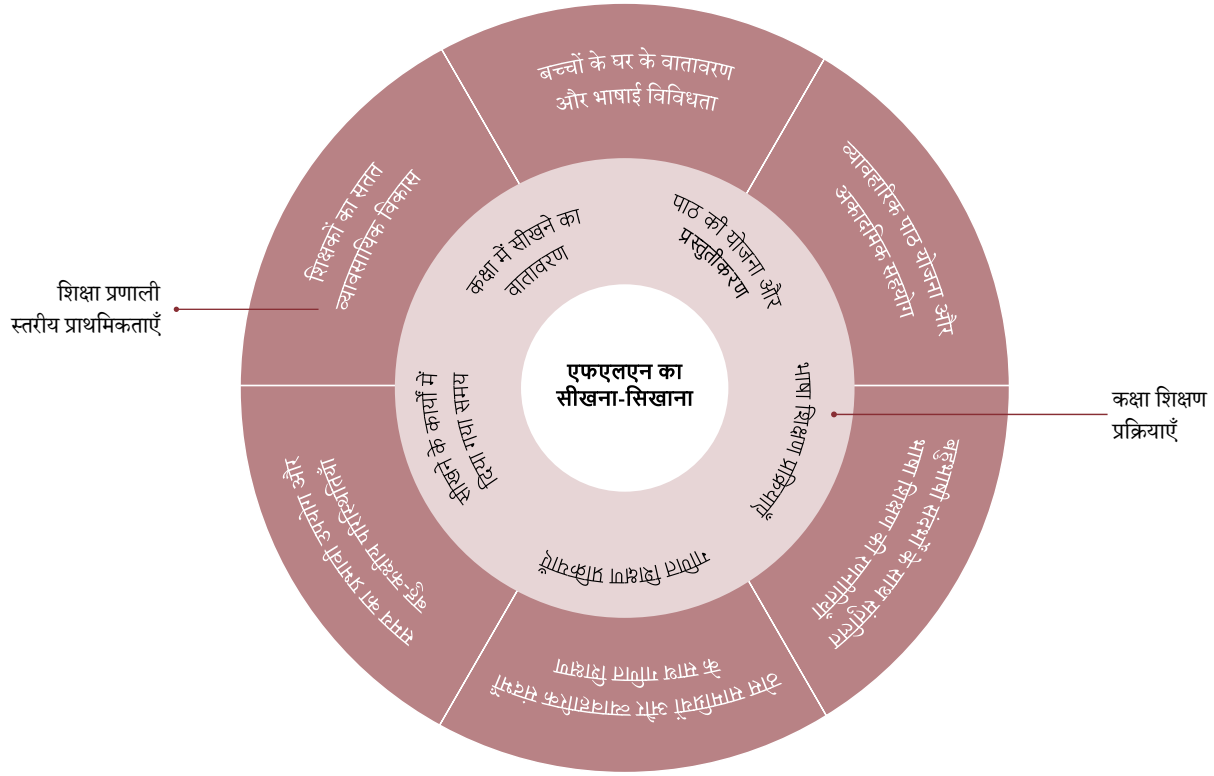

इस रिपोर्ट में दो प्रकार की अनुशंसाएँ शामिल हैं:

- **कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करने के लिए अनुशंसाएँ** जो सीधे तौर पर सर्वे के मुख्य निष्कर्षों पर आधारित हैं। इन्हें अगले खंड में कक्षा-स्तरीय निष्कर्षों के साथ दिया गया है।
- **शिक्षा प्रणाली के स्तर पर परिवर्तन संबंधी अनुशंसाएँ** जो प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं को लागू करने और उनके स्थायित्व में मदद करेंगीं। इन अनुशंसाओं को कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं से संबंधित अनुशंसाओं के बाद के खंड में प्रस्तुत किया गया है।

कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं के लिए निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

कक्षा में सीखने का वातावरण

सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- कक्षा का भौतिक वातावरण, शिक्षक और बच्चों के संबंध, बच्चों को भागीदारी के अवसर, और बच्चों की घर की भाषा का उपयोग।

मुख्य निष्कर्ष

अवलोकित कक्षाओं में से अधिकांश कक्षाओं (78%) में कुछ प्रिंट-समृद्ध सामग्री प्रदर्शित थी, लेकिन ज्यादातर कक्षाओं में यह सामग्री बच्चों की आँखों के स्तर पर नहीं लगाई गई थी।

लगभग तीन-चौथाई (73%) कक्षाओं में बैठने की व्यवस्था पंक्तिबद्ध थी। बहुत कम कक्षाओं में शिक्षण के दौरान गतिविधियों के अनुरूप बैठक व्यवस्था में बदलाव किया गया था।

लगभग एक-चौथाई (21%) कक्षाओं में बच्चे सहज दिखाई दिए, वे खुलकर अपनी बात रख रहे थे और शिक्षकों से बेझिझक संवाद कर रह थे।

45% कक्षाओं में शिक्षकों ने विभिन्न बच्चों से अलग-अलग प्रश्न पूछते हुए उन्हें बातचीत में शामिल किया। व्यक्तिगत रूप से प्रश्न पूछने के बाद एक-तिहाई (37%) से अधिक शिक्षकों ने बच्चों को सोचने के लिए समय दिया।

लगभग दो-तिहाई (66%) शिक्षक बच्चों की घर की भाषा जानते थे, लेकिन बहुत कम शिक्षकों ने बच्चों की भागीदारी और समझ को बढ़ाने के लिए इसका भरपूर उपयोग किया।

अनुशंसाएँ

यह सुनिश्चित किया जाना जरुरी है कि प्रिंट-समृद्ध सामग्री को बच्चों की पहुँच में प्रदर्शित किया जाए। साथ ही शिक्षण के दौरान इसका सक्रिय और सार्थक रूप से उपयोग किया जाए ताकि सीखने में सहयोग मिल सके।

कक्षा शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए, बैठक व्यवस्था को लचीला रखने और छोटे समूहों में काम करने के लिए शिक्षकों को निरंतर प्रेरित किया जा सकता है। ताकि बच्चों में पारस्परिक विचार विमर्श और सहयोग को बढ़ावा मिले।

बच्चों के सीखने के अनुभवों को और अधिक सहज बनाने के लिए, शिक्षक और बच्चों के बीच आत्मीय संबंधों को अधिक संबल प्रदान करने की दिशा में ध्यान दिया जाना उपयोगी सिद्ध हो सकता है ताकि बच्चे अधिक आत्मविश्वासी बन सकें, चर्चा में भाग ले सकें और सीखने की प्रक्रिया में सार्थक रूप से जुड़ सकें।

छत्तीसगढ़ की भाषाई विविधता को देखते हुए, बच्चों की घर की भाषा या स्थानीय भाषा के उपयोग से उनके आत्मविश्वास और अवधारणात्मक समझ में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है।

पाठ योजना और प्रस्तुतीकरण

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- शिक्षकों द्वारा बच्चों को स्पष्ट निर्देश देना, बच्चों के स्वतंत्र कार्य का अवलोकन और मॉनिटरिंग करना, लेखन कार्यों पर फीडबैक देना, समझ की जाँच के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग और कक्षा में सीखने के विभिन्न स्तरों के अनुसार विभेदीकृत शिक्षण (डिफरेंशिएटेड इंस्ट्रक्शन) का उपयोग करना।

मुख्य निष्कर्ष	अनुशंसाएँ
साक्षात्कार के दौरान 70% शिक्षकों ने अगले दिन की पाठ के लिए योजना तैयार करने के बारे में बताया।	यदि हमारे शिक्षक साथी नियमित अवलोकन के दौरान बच्चों की त्रुटियों को सीखने के एक अवसर के रूप में स्वीकार करें और उसके अनुसार शिक्षण विधियों में बदलाव का प्रयास करें, तो बच्चों को कठिनाइयों से उबरने में अधिक मदद मिलेगी।
अधिकांश शिक्षकों (82%) ने समूह या व्यक्तिगत कार्य के दौरान बच्चों के काम की नियमित निगरानी नहीं की या ऐसा केवल कुछ बच्चों के साथ कभी-कभार किया।	बच्चों के काम की नियमित जाँच, गलतियों की स्पष्ट पहचान और सुधार के लिए सरल उपायों के माध्यम से फीडबैक की प्रक्रिया को मजबूत करना आवश्यक है।
एक-चौथाई से अधिक शिक्षकों (29%) ने लिखित कार्य की जाँच की और त्रुटियों की पहचान की। सुधार करने के लिए सार्थक फीडबैक या मार्गदर्शन बहुत कम शिक्षकों ने दिया।	पाठों के दौरान बच्चों की समझ की जाँच के लिए सरल और विविध तरीकों का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि प्रत्येक बच्चे से उनकी सोच को समझाने के लिए कहना या बच्चों को अपनी सीख प्रदर्शित करने के लिए एक छोटा सा कार्य देना।
लगभग दो-तिहाई (65%) शिक्षकों ने पूरी कक्षा से एक साथ सवाल पूछे, जिसका परिणाम यह हुआ कि बच्चों ने सामूहिक रूप से उत्तर दिए। इससे यह स्पष्ट नहीं हो पाता कि बच्चे ने व्यक्तिगत रूप से वास्तव में क्या सीखा है।	सभी विद्यार्थियों को सहयोग प्रदान करने के लिए, शिक्षकों को स्पष्ट रणनीतियों का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि लचीले समूह बनाना, स्तर-आधारित समूहों में मार्गदर्शित अभ्यास कराना और नियमित पाठों के दौरान सहायक कार्य (स्कैफफोल्डेड टास्क) देना।
30% कक्षाओं में शिक्षकों ने अलग-अलग सीखने के स्तर वाले बच्चों के लिए विभेदीकृत शिक्षण की रणनीति का उपयोग किया।	उचित पहचान के बाद, सीखने में कठिनाई का सामना कर रहे बच्चों को अतिरिक्त ध्यान और सहायता प्रदान करना आवश्यक है।

भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ

भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के बारे में प्राप्त निष्कर्ष स्कूलों के बहुत छोटे सैंपल पर आधारित थे, लेकिन समग्र रूझानों के आधार पर यहाँ कुछ व्यापक सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- चर्चा के दौरान बच्चों के पूर्व ज्ञान का उपयोग, खुले छोर वाले प्रश्न पूछना, डिकोडिंग सिखाने के लिए अलग-अलग रणनीतियों का उपयोग, पढ़कर सुनाते (रीड अलाउड) समय समझ आधारित रणनीतियों का उपयोग, बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढने के मौके देना, तथा अभिव्यक्तिपूर्ण लेखन के लिए स्पष्ट संकेत प्रदान करना।

मुख्य निष्कर्ष	अनुशंसाएँ
अवलोकन के दौरान अधिकांश कक्षाओं में मौखिक भाषा विकास का शिक्षण यह दर्शाता है कि शिक्षक शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के साथ मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों के महत्व को समझते हैं।	मौखिक भाषा की गतिविधियों में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके लिए जरुरी है कि विषयों और चर्चाओं को संदर्भों और अनुभवों से जोड़ा जाए। बच्चों से अनुमान लगाने, सोचने और निष्कर्ष निकालने के लिए कहा जाए। और इसके साथ ही उन्हें खुले छोर वाले प्रश्नों के उत्तर में खुलकर बोलने का अवसर प्रदान किया जाए।

मौखिक भाषा विकास संबंधी गतिविधियों के दौरान बच्चों के वास्तविक जीवन के अनुभवों को शामिल करना और खुले छोर वाले प्रश्नों का उपयोग बहुत सीमित था (20% कक्षाओं में)। इससे बच्चों को सोच-विचार करने और स्वयं को अभिव्यक्त करने का बहुत कम अवसर मिला।

डिकोडिंग का शिक्षण व्यवस्थित नहीं था। यह या तो केवल अक्षर या शब्द लिखने पर आधारित था अथवा ध्वनि-प्रतीक संबंध और शब्द जोड़ने (ब्लेंडिंग) को सुदृढ़ करने के लिए केवल एक ही गतिविधि पर आधारित था।

दो-तिहाई (62%) कक्षाओं में बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने का अभ्यास करने का अवसर मिला। बहुत कम शिक्षकों ने इस दौरान बच्चों को मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया।

लगभग तीन-चौथाई (74%) शिक्षकों ने इस प्रकार का लेखन कार्य दिया, जिसमें बच्चों को ब्लैकबोर्ड या पाठ्यपुस्तक से नकल करना या केवल अक्षर और शब्द लिखना शामिल था।

डिकोडिंग को अधिक व्यवस्थित तरीके से सिखाने की आवश्यकता है। इसमें ऐसी कई गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए, जो ध्वनि और अक्षर के संबंध को अलग-अलग तरीकों से मजबूत करें। इसमें सरल शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग भी शामिल है।

बच्चों को शिक्षक के मार्गदर्शन में छोटे समूहों या जोड़ों में और साथ ही स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए।

बच्चों में लेखन कौशल के विकास के लिए, उन्हें केवल बोर्ड या किताबों से नकल करने के बजाय अपने विचारों को अपनी भाषा में टूटी-फूटी वर्तनी के साथ स्वतंत्र रूप से लिखने की स्वतंत्रता देना अधिक मददगार हो सकता है।

गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- शिक्षकों और बच्चों द्वारा शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग करना, गणित के कार्यों को बच्चों को स्वतंत्र रूप से करने के अवसर प्रदान करना, गणितीय अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए बच्चों के वास्तविक-जीवन के अनुभवों का उपयोग करना तथा शिक्षकों द्वारा 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्नों का उपयोग करना।

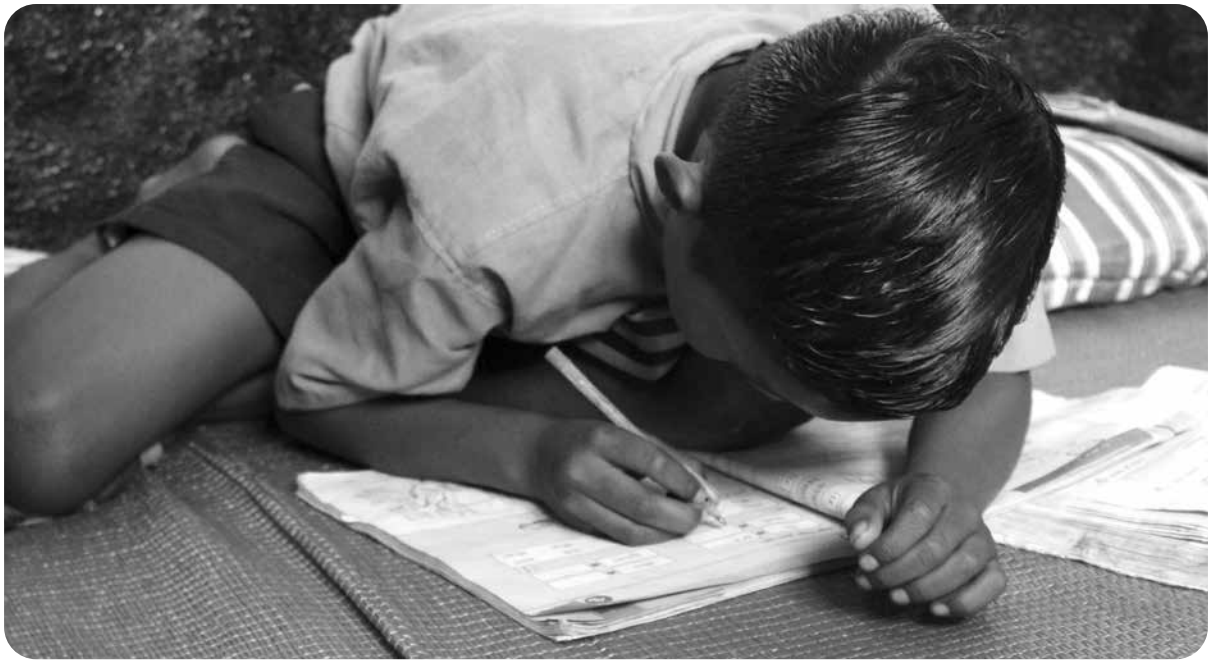

मुख्य निष्कर्ष

आधे से अधिक (53%) शिक्षकों ने गणित शिक्षण के दौरान टीएलएम का उपयोग किया, लेकिन कुछ शिक्षक ही उसका प्रभावी ढंग से उपयोग कर पाए।

अवलोकित लगभग आधी (49%) कक्षाओं में बच्चों को टीएलएम का करने के मौके मिले।

अधिकांश शिक्षकों (82%) ने गणितीय अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझाने के लिए वास्तविक-जीवन के उदाहरणों का उपयोग नहीं किया गया या कभी-कभार किया गया।

आधे से कुछ अधिक (59%) कक्षाओं में बच्चों को स्वतंत्र रूप से अभ्यास करने के अवसर दिए गए। शिक्षकों ने कुछ ही कक्षाओं में स्वतंत्र अभ्यास के दौरान बच्चों का अवलोकन किया उन्हें और मार्गदर्शन दिया।

86% शिक्षकों ने गणित शिक्षण के दौरान तर्क-आधारित 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्न नहीं पूछे।

अनुशंसाएँ

शिक्षकों द्वारा शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का अधिकाधिक, नियमित और बाल-केंद्रित तरीके से उपयोग करने की आवश्यकता है। यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि किसी और को करते हुए देखने के बजाय बच्चों को स्वयं करके देखने और अवधारणाओं को समझने के पर्याप्त अवसर मिलें।

गणितीय अवधारणाओं को सिखाते और उनका अभ्यास कराते समय परिचित और बच्चों के वास्तविक जीवन के अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए। इससे बच्चे दैनिक जीवन में गणित की प्रासंगिकता समझने और व्यावहारिक समस्या-समाधान के कौशल विकसित कर सकेंगे।

स्वतंत्र अभ्यास के दौरान, शिक्षकों को बच्चों के काम की सक्रिय रूप से निगरानी करने और समय पर मार्गदर्शन और प्रतिक्रिया प्रदान करने की आवश्यकता होती है ताकि अभ्यास यांत्रिक दोहराव से आगे बढ़कर वैचारिक समझ और प्रवाह को मजबूत कर सके।

शिक्षकों को 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्न पूछने चाहिए। इससे बच्चे अपने विचारों को स्पष्ट करने, अपने उत्तरों के लिए तर्क देने और अपनी रणनीतियों पर चिंतन करने में सक्षम हो पाएँगे। इससे बच्चों में रटने पर आधारित सीखने को बढ़ावा देने के बजाये गहरी समझ और तार्किक सोच विकसित होगी।

सीखने के कार्यों पर समय

सर्वे के दौरान विभिन्न कक्षा गतिविधियों में शिक्षकों और बच्चों द्वारा बिताए गए समय पर भी ध्यान दिया गया था।

मुख्य निष्कर्ष

बच्चे कुल कक्षा समय के 22% समय के दौरान 'सीखने के कार्य में शामिल नहीं' (ऑफ-टास्क) रहे। जब बच्चे 'सीखने के कार्य में शामिल' (ऑन-टास्क) थे, तो भी उनका अधिकांश समय यांत्रिक या दोहरान वाले कार्यों में ही व्यतीत हुआ।

शिक्षकों का लगभग दो-तिहाई समय (66%) शिक्षक-केंद्रित गतिविधियों में व्यतीत हुआ।

अनुशंसाएँ

शिक्षकों को सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने के लिए शिक्षक-केंद्रित शिक्षण और शिक्षार्थी-केंद्रित अभ्यास के बीच बेहतर संतुलन बनाने की आवश्यकता है।

साथ ही, शिक्षकों को स्वतंत्र तथा समूह आधारित कार्यों की योजना अधिक सोच-समझकर बनानी चाहिए और उनका प्रभावी प्रबंधन करना चाहिए, विशेष रूप से बहु-कक्षा शिक्षण परिस्थितियों में, जहाँ शिक्षक का ध्यान बँटा हुआ रहता है।

अन्य निष्कर्ष

- शिक्षकों में एफएलएन लक्ष्यों और अधिगम प्रतिफलों के प्रति गहरी जागरूकता पाई गई थी।
- 91% शिक्षकों ने बताया कि उन्होंने पिछले एक साल में एफएलएन पर आधारित प्रशिक्षण में भाग लिया है।
- लगभग सभी शिक्षकों का विश्वास है कि निपुण/एफएलएन मिशन का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
- सर्वे में शामिल 89% शिक्षकों ने बताया कि उन्हें अकादमिक सहयोग प्राप्त होता है। 71% शिक्षकों ने कहा कि उन्हें ये सहयोग नियमित रूप से प्राप्त होता है।

शिक्षा प्रणाली के स्तर पर परिवर्तन के लिए अनुशंसाएँ

यह खंड उन महत्वपूर्ण प्रमुख प्रणालीगत पहलुओं को रेखांकित करता है, जिन्हें सुदृढ़ करना आवश्यक है। इससे पिछले खंड में वर्णित कक्षा-स्तरीय परिवर्तनों को प्रभावी रूप से लागू और सतत बनाए रखा जा सकेगा।

1. बच्चों के घर के वातावरण और भाषाई विविधता के अनुकूल सीखने का माहौल

राज्य के स्कूलों में बच्चा जब पहली बार स्कूल आता है, तो उसकी घर की भाषा और स्कूल की भाषा में काफी अंतर होता है। कक्षा के माहौल को ऐसा बनाना होगा जहाँ बच्चा बेझिझक अपनी बात कह सके। राज्य स्तर पर ऐसी नीतियाँ और निर्देश जारी हों जिससे शिक्षक कक्षा में बच्चों को उनकी मातृभाषा (गोंडी, हल्बी, कुड़ुख, सादरी या छत्तीसगढ़ी आदि) में बोलने और अभिव्यक्ति करने के लिए प्रोत्साहित करें। राज्य स्तर से मिलने वाली सामग्री स्थानीय परिवेश, और संस्कृति पर आधारित होनी चाहिए।

2. व्यावहारिक पाठ योजना और स्कूल स्तर पर अकादमिक सहयोग

शिक्षक कक्षा में बच्चों की प्रगति को बारीकी से देखकर उसके अनुसार पाठ योजना बनाएँ। स्कूल स्तर पर दिए जाने वाले अकादमिक सहयोग की व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता होगी। निरीक्षण के बजाय सहयोगात्मक पर्यवेक्षण पर बल देना चाहिए। संकुल अकादमिक समन्वयक (सीएसी), खंड सन्दर्भ समन्वयक (बीआरसी) और अन्य अधिकारी स्कूल विजिट के दौरान कक्षा में जाकर बच्चों और शिक्षकों से बात करें, कक्षा की उनकी समस्याओं को समझें, किसी अवधारणा को सिखाने के तरीकों का प्रदर्शन करें और शिक्षकों को व्यावहारिक सुधारात्मक फीडबैक दें।

अकादमिक सहयोगकर्ताओं को गैर-शैक्षणिक प्रशासनिक कार्यों और आँकड़ों को जमा करने संबंधित काम से यथासंभव मुक्त किया जाए ताकि वे अपना पूरा समय शिक्षकों के साथ शैक्षणिक विमर्श और स्कूल के दौरों में बिता सकें।

3. बहुभाषी संदर्भों के साथ संतुलित भाषा शिक्षण की रणनीतियाँ

प्राथमिक स्तर पर एक ऐसा बहुभाषी पाठ्यक्रम लागू किया जाना चाहिए जो बच्चों की घर की भाषा से शुरू होकर धीरे-धीरे खेल और मौखिक चर्चाओं के माध्यम से स्कूल की भाषा (शिक्षा के माध्यम) की तरफ बढ़े।

शिक्षक संदर्शिकाओं और प्रशिक्षणों में इस बात पर जोर दिया जाए कि बच्चा केवल ब्लैक बोर्ड से देखकर सामग्री को कॉपी न करे। इसके बजाय, मौखिक भाषा विकास के लिए खुली बातचीत, कहानी सुनाने और बच्चों को अपनी खुद की भाषा में छोटी कहानियाँ सुनाने या विचार लिखने के भरपूर मौके दिए जाएँ।

4. **ठोस सामग्रियों और व्यावहारिक संदर्भों के साथ गणित शिक्षण**

गणित को केवल संख्याओं और पहाड़ों के रटने का विषय मानने के बजाय बच्चों की तार्किक सोच से जोड़ना होगा। प्रशिक्षणों के दौरान शिक्षकों को इन सामग्रियों के उपयोग के विशेष सत्र आयोजित किए जाने चाहिए। उन्हें यह भी बताया जाना चाहिए कि इमली के बीजों, तीली-बंडलों, कंकड़ और स्थानीय खेलों (जैसे गिल्ली-डंडा, बाटी) का उपयोग करके बच्चे खुद जोड़, घटाव और स्थानीय मान (इकाई-दहाई) की अवधारणा कैसे सीख सकते हैं। गणित शिक्षण में केवल उत्तर सही होने पर ध्यान न देकर बच्चों से 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्न पूछने की संस्कृति विकसित की जाए।

5. **समय का प्रभावी उपयोग और बहु-कक्षीय परिस्थितियाँ**

शिक्षक प्रशिक्षण सत्र, शिक्षक संदर्शिकाओं और समय-सारणी को इस तरह से तैयार किया जाए जो एकल-कक्षा के बजाय बहु-कक्षीय विद्यालय की परिस्थितियों के अनुकूल हों। शिक्षकों को यह व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए कि वे कक्षा 1 और 2 के बच्चों को स्तर के अनुसार छोटे समूहों में बाँटकर समय का सही विभाजन और गुणात्मक उपयोग कैसे करें।

शिक्षकों को कक्षा में बच्चों की निष्क्रियता (जब वे बिना किसी काम के चुप बैठे रहते हैं) को कम करने के लिए स्व-निर्देशित गतिविधियाँ (जैसे स्वतंत्र पठन कोना, चित्र बनाना या वर्ण कार्ड से शब्द बनाना) तैयार करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए, जिससे जब वे एक समूह के साथ काम करें, उस समय दूसरा समूह भी व्यस्त रहे।

6. **बाल-केंद्रित सतत आकलन और शिक्षकों का सतत व्यावसायिक विकास (सीपीडी)**

व्यावहारिक और अभ्यास-आधारित शिक्षक प्रशिक्षण पर बल दिया जाए। शिक्षकों के लिए आयोजित होने वाले प्रशिक्षण व्याख्यान-आधारित न होकर पूरी तरह से गतिविधि-आधारित और अभ्यास-उन्मुख होने चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षणों में स्थानीय भाषाओं के उपयोग और बहुभाषी शिक्षा (एमएलई) के शिक्षण शास्त्र को अनिवार्य रूप से शामिल होना चाहिए।

कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए जहाँ तक संभव हो, लिखित परीक्षाओं की जगह खेल-खेल में मौखिक आकलन और पोर्टफोलियो बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाए।

MONDAY
TUESDAY
THURSDAY
SATURDAY

टीएलपीएस 2025 के बारे में

टीएलपीएस 2025 द्वारा कक्षा 1 और 2 में भाषा और गणित के शिक्षण-अधिगम के तरीकों पर व्यापक स्तर के व्यवस्थित साक्ष्य प्रस्तुत किए गए हैं। यह सर्वे नवंबर 2024 से मार्च 2025 के बीच नौ राज्यों—असम, छत्तीसगढ़, हरियाणा, झारखण्ड, महाराष्ट्र, मेघालय, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश—में किया गया था। इसमें 21 जिले और 1,050 कक्षाएँ शामिल थीं। अलग-अलग शैक्षिक सन्दर्भों को शामिल करते हुए, टीएलपीएस बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) के लिए वर्तमान शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं की एक स्पष्ट और समग्र तस्वीर प्रस्तुत करता है।

टीएलपीएस 2025 लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन के नेतृत्व में और टाटा ट्रस्ट के सहयोग से विभिन्न संस्थाओं के समूह द्वारा क्रियान्वित किया गया था। अध्ययन में शामिल संस्थाएँ हैं- सेंटर फॉर माइक्रो फाइनेंस (सीएमएफ), मधी फाउंडेशन, क्वालिटी एजुकेशन सपोर्ट ट्रस्ट (क्वेस्ट), विक्रमशिला एजुकेशन रिसोर्स सोसाइटी और एजुकेशनल इनिशिएटिव्स (ईआई)।

टीएलपीएस 2025 रिपोर्ट में प्रस्तुत निष्कर्ष कक्षा में सीखने-सिखाने के माहौल, पाठ योजना और उसके प्रस्तुतीकरण, भाषा और गणित शिक्षण के लिए कुछ चुनी गई शिक्षण प्रक्रियाओं, तथा शिक्षक और बच्चों की विभिन्न गतिविधियों में लगने वाले समय का वर्णन और विश्लेषण करते हैं। यह रिपोर्ट एफएलएन के कुछ पहलुओं और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के बारे में शिक्षकों की धारणाओं के बारे में भी बताती है। टीएलपीएस 2025 की सिफारिशें यह बताती हैं कि कक्षा शिक्षण की प्रक्रियाओं को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है। साथ ही ये भी अनुशंसा करती है कि शिक्षा प्रणाली के स्तर पर कौन से सुधार किए जाने चाहिए, जिससे एफएलएन के दौरान शिक्षण-अधिगम के तरीकों में होने वाले बदलावों को संभव और स्थायी बनाया जा सके।

LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION
Strong Foundation, Stronger Future.

www.languageandlearningfoundation.org
Language and Learning Foundation
@llf_ig
Language and Learning Foundation
LLF_edu
languageandlearningfoundation1193

TLPS 2025 के लिए प्रपत्र और कक्षा-वार डेटा तालिकाएँ ऊपर दिए गए QR कोड से प्राप्त की जा सकती हैं।